IJAER/July- August- 2021/Volume-10/Issue-1 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की ऑनलाइन अधिगम संसाधनों के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति के अध्ययन का साहित्य सर्वेक्षण

Mr. Arun Kumar
Scholar
Department of Education
Malwancha University, Indore(M.P.).

Dr. Ritu Bhardwaj
Supervisor
Department of Education
Malwancha University, Indore(M.P.).

सार–

किसी भी शोधकार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व यह ज्ञात होना अत्यावश्यक है कि उस क्षेत्र में कितना, कहाँ, कब एवं किस प्रकार का क्या–क्या शोधकार्य हो चुका है क्योंकि अनुसंधान का प्रथम चरण अनुसंधान के विषय से सम्बन्धित प्रकाशित तथा अप्रकाशित साहित्य का गहनता से अध्ययन करना होता है। विषय अथवा समस्या से सम्बन्धित सन्दर्भ साहित्य, शोध पत्र–पत्रिकाएं, लेखों, पुस्तकों आदि का अध्ययन करना होता है। ऐसा करने से विषय की समस्या से सम्बन्धित जो भी अध्ययन हुए हैं, उसकी जानकारी मिल जाती है तथा आगे किस समस्या पर अनुसंधान हेतु शोध कार्य करें, इसका भी पता चल जाता है। अतः एक अनुसंधानकर्ता के लिए यह जरूरी होता है, कि वह अपने क्षेत्र या विषय से सम्बन्धित साहित्य, पत्र–पत्रिकाओं का अध्ययन करें। कभी–कभी विवरण पढ़ कर उसके प्रति हम सषंकित हो उठते हैं, कि पठित विवरण सही है, अथवा नहीं। ऐसी स्थिति में उन पर पुनःशोध अवलोकन होना चाहिए। इस स्थिति में प्रकाशित अनुसंधान की प्रक्रिया की ज्यों की–त्यों पुनरावृति की जा सकती है। कभी–कभी पूर्व प्रकाशित अनुसंधान की विधि अथवा प्रदत्त संग्रह की प्रक्रिया दोषयुक्त प्रतीत होती है अथवा चरों का प्रभावषाली नियमन नहीं किया होता। इन सभी स्थितियों में अनुसंधानकर्ता पुनः उसी समस्या पर अध्ययन कर सकता है। ऐसे पूर्व प्रकाशित शोध यद्यपि समस्या के सरलतम स्रोत होते हैं किन्तु परिणामों की वैद्यता, मापन–विधि अथवा प्रदत्त संग्रह प्रक्रिया में संदेह होने पर इनसे सम्बन्धित नवीन समस्या की उत्पत्ति की जा सकती है।

प्रस्तावना–

सम्बन्धित साहित्य के पुनरावलोकन के दो पक्ष होते हैं। प्रथम पक्ष के अन्तर्गत समस्या के क्षेत्र में प्रकाशित सामग्री को पहचानना तथा जिस भाग से हम पूरी तरह अवगत नहीं हैं, उसको पढ़ना आता है। इसके अन्तर्गत हम उन विचारों तथा परिणामों का विकास करते हैं, जिसके आधार पर हमारा अध्ययन किया जायेगा। द्वितीय पक्ष में शोध अभिलेख के भाग में इन विचारों को लिखना निहित है। यह भाग शोधकर्ता और वाले व्यक्तियों के लिए लाभकारी है जो शोधकर्ता के लिए उस क्षेत्र की भूमिका स्थापित करता है, और पढ़ने वालों के लिए आवश्यक शोधों का सारांश प्रस्तुत करता है।

विश्व के समस्त जीव प्राणियों में मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के साथ ही एक बौद्धिक प्राणी होने के कारण अपने ज्ञान कोश में नवीनता, आविष्कारों तथा जानकारियों में वृद्धि करता रहता है। केवल मानव ही

एक ऐसा प्राणी है जो सदियों से एकत्र किये गये ज्ञान का लाभ उठा सकता है। मानवीय ज्ञान के तीन पक्ष होते हैं– ज्ञान को संचित करना, ज्ञान का प्रसारण करना और ज्ञान में वृद्धि करना। यह तथ्य शोध में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जो कि वास्तविकता के समीप आने के लिए निरन्तर प्रयास करता रहता है। व्यावहारिक रूप में तो धन की भाँति सम्पूर्ण मानव ज्ञान पुस्तकों में तथा पुस्तकालयों में मिल सकता है। अन्य प्राणियों से भिन्न, मानव को अतीत से प्राप्त ज्ञान को प्रत्येक पीढ़ी के साथ नये रूप में प्रारम्भ करना चाहिए। ज्ञान के विस्तृत भण्डार में इसका निरन्तर योगदान प्रत्येक क्षेत्र में मानव द्वारा किये गये प्रयासों की सफलता को सम्भव बनाता है। शोधार्थी यह निश्चित कर सकता है कि इसके द्वारा प्रस्तावित शोध से सम्बन्धित विषयों पर विचारणीय कर्ा पहले ही हो चुका है अथवा नहीं।

शोध इस देष की नयी समस्या से शुरू नहीं होता शोधार्थी इस समस्या से पहले भी रूबरू हो चुके है और एक निश्चित मात्रा का अनुभव इस विषय में रखते है। पहले किये गये अध्ययनों ने सूचना और सलाह की एक निश्चित आधारशिला प्रदान की। शोधार्थी ने व्यर्थ के दोहराव से बचने के लिए उपलब्ध अध्ययन सामग्री का पूर्ण अध्ययन किया। तैयार की गयी ग्रन्थ सूची, तत्काल विचार और परिकल्पना, संशोधन के सही तरीकों ने शोधार्थी की दिशा निर्धारित की। विद्वानों ने विषय से सम्बन्धित क्षेत्र को ठीक करने के लिए संघर्ष किया है परन्तु कुछ कार्यों ने विद्वानों के प्रयासों के सरलीकृत कार्यों में भ्रम उत्पन्न किया किन्तु इन कोशिशों ने रूचि को आकर्षित किया जो विषय क्षेत्र में लम्बा सफर करना चाहते थे उन्होंने अपने आपको अपर्याप्त प्रकाष के कारण अंधकार में गिरता हुआ पाया। यह प्रदर्शित नहीं करता कि ये शोध नये शोधों के समान है जिन्होंने शुरूआती संशोधनों में उत्साह से कार्य किया और जल्द ही विचलित और भययुक्त हो गये क्योंकि उनमें से बहुत सी बातें उनकी समझ से बाहर थी। इस सर्वेक्षण ने कुछ अंतः समझ दी कि किस प्रकार पहले विद्वानों ने विषय की समस्या का समाधान किया वो चाहे उनके शोध या अध्ययन का सारांश का सबूत हो सकता है जो सम्मिलित करता है कि किस प्रकार उन्होंने अपनी समस्या कुछ तरीकों अति आवश्यक तकनीकों जो उन्होंने अपनाये को अंकित किया सामान्यतः घटनाओं के क्रम जो छानबीन के दौरान सामने आते है निपुणता और ज्ञान जो अध्ययन के लिए आवश्यक थे, पुस्तकालय और संशोधन तकनीक जो उपस्थित थे इन सभी ने शोधकर्ता को अपनी नीति और उपायों तथा तत्काल प्रयासों को सुधारने में सहायता प्रदान की। सर्वेक्षण कार्यों ने अनुसरण योग्य सिद्धान्त और तथ्यों को साथ लाने की कोशिश की और उनको एक अर्थपूर्ण सम्बन्धों के नेटवर्क में बुना, ज्ञान की दूरी को घटाया तथा इस शोध के लिए तर्कपूर्ण रास्ता तैयार किया। पूर्ववर्ती अध्याय में विषय प्रवेश, शब्दों एवं समस्या की स्पष्टता, व्याख्या, उद्देश्य, परिकल्पना, महत्व, सीमांकन एवं उपयोगिता के बाद शोध समस्य की पूर्णता हेतु समस्या से सम्बन्धित साहित्यों का सर्वेक्षण आवश्यक हो जाता है। इस अध्याय में समस्या से सम्बन्धित पूर्ववर्ती शोध साहित्य को ग्रहण किया गया है। समस्या के उद्देश्यों की पूर्ति एवं स्पष्टता हेतु अनेक प्रकार के मूल ग्रन्थों, प्रबन्धों एवं शोधों का सहारा लिया है।

फ्रेंकलिन, ए0 (2019) ने अपना शोधकार्य 'हाईस्कूल के विद्यार्थियों द्वारा इण्टरनेट का उपयोग एवं प्रभाव' विषय पर शिक्षा विभाग, वीर नर्मद साउथ गुजरात यूनिवर्सिटी, सूरत, गुजरात में प्रस्तुत किया। जिसका उद्देश्य इण्टरनेट आधारित शोध था। इण्टरनेट एक ऐसी तकनीक है जो लोगों के दैनिक जीवन का एक बहुत बड़ा हिस्सा बन गया है। पिछले दषकों में इण्टरनेट कनैक्टिविटी में जबरदस्त सुधार हुआ है और यह हर जगह जैसे घरों, कार्यालयों, यात्रा और स्कूलों में उपलब्ध भी है। आज अनुभवजन्य अध्ययन की रिपोर्ट है कि इण्टरनेट तक छात्रों की पहुँच उनके शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित कर सकती है। हालांकि नगर पालिका द्वारा संचालित हाई स्कूल के विद्यार्थियों के मध्य इण्टरनेट के उपयोग पर अध्ययन सीमित है। जिससे यह अनिश्चित हो जाता है कि क्या नगर पालिका के हाई स्कूल के छात्र इण्टरनेट का

उपयोग करते हैं और इसका प्रभाव उनके शैक्षणिक प्रदर्शन पर पड़ता है। इसलिए, इस अध्ययन के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि नगर पालिका के हाई स्कूल के विद्यार्थियों पर इण्टरनेट के उपयोग का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। अध्ययन हेतु प्राथमिक आँकड़ों में 314 हाई स्कूल के विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श के आधार पर किया गया।

आँकड़ों को प्रश्नावली का उपयोग कर एकत्रित किया गया और वर्णनात्मक आँकड़ों कोकाई–स्क्वायर और एनोवा का उपयोग करके विश्लेषण किया गया था। परिणामों के अन्तर्गत पाया गया कि इण्टरनेट के उपयोग हेतु विद्यार्थियों द्वारा सूचना संचार प्रयोगषाला, मोबाइल फोन, घरेलू इण्टरनेट सुविधायें और सार्वजनिक इण्टरनेट कैफे आदि का चयन किया जाता है। इसके अलावा विद्यार्थियों की इण्टरनेट तक पहुँच उनके शैक्षणिक प्रदर्शन पर सकारात्मक प्रभाव डालती है। हालांकि छात्रों के बीच इण्टरनेट के सभी उपयोग उनके शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित नहीं करते हैं। अध्ययन का निष्कर्ष है कि विद्यार्थियों को विभिन्न इण्टरनेट स्रोतों की उपलब्धता उन सभी को सरलता से प्राप्त हो जाती है। इसलिए यह सिफारिश की गयी है कि हाई स्कूल के विद्यालयों के विद्यालय प्रमुखों को विद्यालयों में इण्टरनेट के बुनियादी ढ़ांचे को प्रदान करने के लिए नीति निर्माताओं और सेवा प्रबन्धन के साथ सम्पर्क कर विद्यालयों में इण्टरनेट की सुविधा की उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए। यह भी प्रासंगिक है कि विद्यालयों में इण्टरनेट के बुनियादी ढांचे का प्रावधान एकाडमिक प्रदर्शन को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण रणनीति है। विद्यार्थियों को विभिन्न इण्टरनेट स्रोतों की उपलब्धता उन सभी को शैक्षणिक गतिविधियों में भाग लेने में सहायता पहुँचाती है।

कमाल, एस0 (2018) ने अपना शोधकार्य 'पाकिस्तान में छात्रों के एकाडमिक जीवन पर इण्टरनेट का प्रभाव' विषय पर शिक्षा विभाग, कराची यूनिवर्सिटी, कराची, पाकिस्तान में प्रस्तुत किया। जिसका उद्देश्य यह ज्ञात करना था कि इण्टरनेट सूचना एवं प्रौद्योगिकी की दुनिया में सबसे बड़ी उन्नति में से एक है और यह एक साधन भी बन गया है जिसने दुनिया को एक वैष्विक गाँव बनाने की प्रक्रिया को बढ़ावा दिया है। यह एक सार्वभौमिक तथ्य है कि विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि और सामाजिक जीवन पर इण्टरनेट के उपयोग का बहुत प्रभाव पड़ता है। विश्वविद्यालय के छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन, सामाजिक जीवन और बाहरी गतिविधि पर इण्टरनेट के उपयोग के प्रभाव के लिए विभिन्न अध्ययनों का आयोजन किया गया है। विश्वविद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि और सामाजिक जीवन पर इण्टरनेट के उपयोग के प्रभाव को दर्शाने वाली चित्रमय प्रस्तुति के साथ कार्यक्रम तैयार किया गया था। पाकिस्तान के दो संघीय विश्वविद्यालयों से चुने गए 120 विद्यार्थियों पर इस शोध को आयोजित किया गया था। अध्ययन से निष्कर्ष निकाला गया कि इण्टरनेट का उपयोग विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के शैक्षणिक जीवन और सामाजिक जीवन को प्रत्यक्ष रूप में प्रभावित करने वाले कारकों में से एक प्रमुख कारक है। जब तक इण्टरनेट का उपयोग शैक्षिक उद्देश्य के लिए नहीं किया जाता है तब तक इण्टरनेट खर्च करने वालों की संख्या विद्यार्थियों के प्राप्तांक को प्रभावित करेगी। छात्र अच्छा स्कोर प्राप्त करने के लिए एवं शैक्षणिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए इण्टरनेट का उपयोग अधिक से अधिक करते हैं तो उनकी उपलब्धि भी उत्तम स्तर की होगी। इण्टरनेट का उपयोग का सामाजिक जीवन पर प्रभाव के विषय में चित्रमय प्रतिनिधित्व दर्शाता है कि इण्टरनेट का अधिकतम उपयोग, विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक गतिविधियों को कम करता है। अध्ययन के उद्देश्य औरअकादमिक उपलब्धियों के लिए इण्टरनेट का अध्ययन एवं शैक्षणिक सम्बन्ध एक दूसरे के लिए सीधे आनुपातिक हैं जबकि विश्वविद्यालय के छात्रों के सामाजिक जीवन के विपरीत है।

अनवार, ए0 (2014) ने अपना शोधकार्य 'ए स्टडी ऑफ इण्टरनेट एडिक्शन अमन्ग सैकन्डरी स्कूल चिल्ड्रेन्स' विषय पर शिक्षा विभाग, इन्टीग्रल यूनिवर्सिटी, लखनऊ में प्रस्तुत किया। जिसका उद्देश्य सैकन्डरी स्कूल के विद्यार्थियों में इण्टरनेट के आदी होने के कारणों की खोज करना था।

प्रस्तुत शोध में लखनऊ के हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम से सैकन्डरी स्कूल के 300 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप सम्मिलित किया गया था। इण्टरनेट एडिक्शन टैस्ट का प्रयोग ऑकड़ों के संग्रहण हेतु किया गया था। अध्ययन में पाया गया कि लड़कियों की अपेक्षा लड़के इण्टरनेट प्रयोग के अधिक आदी पाये गये। कुल न्यादर्श का 10 प्रतिशत इण्टरनेट का उच्च स्तरीय आदी था जो बिना इण्टरनेट के अपने जीवन की कल्पना ही नहीं कर सकता था। कुल न्यादर्श का 26ण्7 प्रतिशत ऐसे विद्यार्थियों का था जो अपना अधिक समय इण्टरनेट सेवाओं के उपभोग में ही खर्च करते थे। जबकि 40 प्रतिशत विद्यार्थी आवश्यकतानुसार इण्टरनेट सेवाओं का प्रयोग कर रहे थे। 23.3 प्रतिशत विद्यार्थी इण्टरनेट के प्रयोग से अनभिज्ञ थे जो केवल कक्षा शिक्षण पर ही निर्भर करते थे।

राजेन्द्र पाल (2011) ने 'शिक्षक–प्रशिक्षकों का सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति दृष्टिकोण एवं इसकी सुगमता' पर अध्ययन किया। यह अध्ययन केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान के रजत जयंती वर्ष में देश के विभिन्न हिस्सों में आई.सी. टी. पर आयोजित व्याख्यान माला के अंतर्गत एकत्रित किए गए प्रदत्तों से निकाले गए निष्कर्ष पर आधारित है। लगभग 1500 शिक्षक–प्रशिक्षकों, शिक्षकों और प्रशिक्षणार्थियों ने एक प्रपत्र के माध्यम से अपने विचार इस विषय पर व्यक्त किए। इस शोध पत्र में शिक्षक–प्रशिक्षकों एव प्रशिक्षणार्थियों के आई.सी.टी. और मीडिया के बारे में दृष्टिकोण की विवेचना की गई है। इस अध्ययन का एक उद्देश्य कम्प्यूटर और आई.सी.टी. की शिक्षक–प्रशिक्षकों के लिए सुगमता जानना भी था।

अध्ययन से पता चलता है, कि अधिकांशतः शिक्षक–प्रशिक्षकों के पास आधारभूत मीडिया की सुविधाएं हैं और उनके दृष्टिकोण में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का महत्त्व शिक्षण अधिगम में बहुत अधिक है। परंतु प्रशिक्षकों का एक समूह यह नहीं जानता कि मीडिया या आई.सी.टी. का उपयोग किस तरह से शैक्षिक प्रक्रिया के अंग के रूप में करें तथा कुछ शिक्षक–प्रशिक्षक यह नहीं जानते कि उनके विषय में मीडिया और आई.सी.टी. आधारित सामग्री कहाँ से प्राप्त होगी। अप्रत्याशित रूप से अधिकांश शिक्षक–प्रशिक्षक तथा शिक्षक यह समझते हैं कि वे अपने विषय को बिना कम्प्यूटर की सहायता से पढ़ा सकते हैं।

बिस्ट जया (2010) ने 'गणित विषय के लिए इण्टरनेट पर उपलब्ध संसाधनों का अध्ययन एवं शिक्षकों के लिए मॉड्यूल' का निर्माण किया। उद्देश्य– इण्टरनेट पर गणितीय संसाधनों से युक्त वेबसाईट को पहचानना। इण्टरनेट पर उपलब्ध गणितीय संसाधनो का विश्लेषण विद्यालयी स्तर, गणित की विभिन्न षाखाओं, तथा उपयोगिता लागत के आधार पर करना। उपलब्ध संसाधनों से गणित शिक्षकों के लिए मॉडयूल का निर्माण करना। मॉडयूल के प्रति गणित शिक्षकों की राय जानना। इस अध्ययन के उपरान्त यह पाया गया कि सर्च इंजन व खोज शब्दों की सहायता से 363 वेबसाइट्स को प्राप्त किया गया। विभिन्न स्तरो व षाखाओं की लागत के आधार पर प्राप्त हुई इन उपलब्ध संसाधनों के निर्मित मॉड्यूल के प्रति 98.51 प्रतिशत शिक्षकों की राय सकारात्मक पायी गई।

एन.पी.एस. चंदेल एवं निजा वेश (2008) ने 'विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा इण्टरनेट के उपयोग के प्रति उत्प्रेरणात्मक भाव' का अध्ययन किया। शोध के उद्देश्य थे– इण्टरनेट की उपलब्धता, इण्टरनेट के उपयोग के लिए एक उत्प्रेरणात्मक कारक का अध्ययन करना। इण्टरनेट की जानकारी के स्त्रोतों का पता

लगाना। इण्टरनेट उपयोग करने के लिए दोस्तों, अभिभावकों एवं अध्यापकों की एक उत्प्रेरक के रुप में, भूमिका का अध्ययन करना। विश्वविद्यालयी विद्यार्थियों द्वारा इण्टरनेट उपयोग करने के उद्देश्यों का अध्ययन करना। निष्कर्ष में यह पाया गया कि कम्प्यूटर एवं इण्टरनेट की घर पर उपलब्धता इण्टरनेट उपयोग का एक महत्वपूर्ण उत्प्रेरणात्मक कारक है।

परिवार का वातावरण भी इण्टरनेट के उपयोग करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अधिकतर विद्यार्थियों को इण्टरनेट की जानकारी उनके दोस्तों से प्राप्त होती है। ज्यादातर विद्यार्थी षैक्षणिक की बजाय अषैक्षणिक उद्देश्यों के लिए इण्टरनेट का उपयोग करते हैं, ज्यादातर 'वयस्क इण्टरनेट साइट' का उपयोग करते हैं।

गोदियाल, राकेश भूषण और गोदियाल, सुनीता (2007) ने अपने लेख 'अध्यापक सशक्तिकरण में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका' के अंर्तगत बताया है कि किस प्रकार सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ने शिक्षा के विभिन्न पक्षों जैसे, शिक्षा के उद्देश्य, व्यवस्था, प्रबंधन, शिक्षण तकनीक, नियोजन सहायक सामग्री तथा विधियों को अधिक वैज्ञानिक एवं उन्नतिशील बनाकर शिक्षा को रुचिपूर्ण एवं रोजगारोन्मुख भी बनाया है, किन्तु इन सभी लक्ष्यों की प्राप्ति में निसन्देह शिक्षक की भूमिका का महत्व अधिक बढ जाता है। वर्तमान प्रौद्योगिकी संस्कृति की परिस्थितियों में सूचना तकनीक के ग्लोबल प्रभाव से शिक्षण एवं अधिगम प्रक्रिया भी प्रभावित हुई है। अतः अध्यापक सशक्तिकरण में सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग भी किया जाना निहायत आवश्यक हो जाता है।

कुमार सतीष, (1992) 'विभिन्न प्रकार के विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृति एवं समायोजन' अध्यापकों की अध्यापन अभिवृति एवं समायोजन का विभिन्न संकाय के विद्यालयों पर अध्ययन कर निष्कर्ष में बताया कि गुरूकुल शिक्षा पद्धति में अध्यापकों की अध्यापन अभिवृति सर्वाधिक सकारात्मक एवं समायोजन स्तर उच्च है। मदरसों के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृति तथा समायोजन स्तर मध्यम तथा केन्द्रिय विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृति तथा समायोजन स्तर न्यून पाया गया।

जेयामन, पी. (1991) ने 'इफेक्टीवनैस ऑफ दि सिमुलेशन मॉडल ऑफ टीचिंग थ्रो कम्प्यूटर असिसटिड़ इन्सट्रक्शन' पर अपना कार्य किया। इसमें इन्होंने भौतिक शिक्षण पर सिमुलेशन मॉडल का प्रभाव का अध्ययन किया। इस हेतु इन्होंने दो स्कूल के कक्षा 11 के विद्यार्थी लिए गए। जिस पर पूर्व व पश्चात् परीक्षण किए और मध्यमान, प्रमाप विचलन व 'टी' परीक्षण की सहायता से परिणाम निकाले गए। इस अध्ययन में इन्होंने देखा कि– 1. प्रयोगात्मक समूह, नियन्त्रित समूह की तुलना में ज्यादा मध्यमान प्राप्त करता है। 2. लिंगानुसार तुलना की दृष्टि से यह अध्ययन सार्थक है। 3. तमिल माध्यम व अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने की दृष्टि से दोनों समूहों के अधिगम स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।
सिंह, आर.डी., आहलूवालिया, एस.पी. व वर्मा, एस.के. (1991) ने कम्प्यूटर सहायक अनुदेशन व परम्परागत निर्देशन विधि के द्वारा गणित शिक्षण पर प्रभावशीलता का अध्ययन किया। जिसमें कम्प्यूटर की प्रभावशीलता को केन्द्र मानते हुए, इस समस्या का अध्ययन किया इस अध्ययन में इन्होंनं छात्र व छात्राओं का अलग–अलग समूह बनाया और दोनों को अलग–अलग विधियों से शिक्षण कराया। इस अध्ययन में इन्होंने पाया कि जो विद्यार्थी कम्प्यूटर के माध्यम से पढ़ते हैं वो परम्परागत विधि की तुलना में ज्यादा अंक प्राप्त करते हैं।

पटेल और राव (2005) ने अध्यापकों की अभिप्रेरणा निर्धारक और विद्यालय शक्तिकरण के प्रति उपलब्धि पर षोधकार्य किया और निश्कर्श में बताया कि अध्यापकों की अभिप्रेरणा और विद्यालय वातावरण में निश्पादन में सहसम्बन्ध पाया गया। अध्यापकों की उपलब्धि उनके व्यक्तिगत योग्यता, अवबोध की भूमिका, अध्यापकों का उत्तरदायित्व और विद्यालय प्रमुख की प्रषासनिक दक्षता और सार्थक कक्षा–कक्ष वातावरण प्रभावित करता है। अध्यापकों की व्यक्तिगत योग्यता, अवबोध की भूमिका, अध्यापकों का उत्तर–दायित्व और सार्थक कक्षा–कक्ष वातावरण का उनकी अभिप्रेरणा से सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। पुरस्कार की अवसरता और अध्यापकों की अभिप्रेरणा में उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। अध्यापकों के वर्तमान वेतनमान और उनकी अभिप्रेरणा में नकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

त्रिपाठी, उर्मिला (2012) ने 'दूरस्थ एवं सामान्य बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन' किया। दूरस्थ शिक्षा एवं सामान्य बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की लिंग के आधार पर वैज्ञानिक अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन करना। प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा अध्ययन केन्द्र के 40 दूरस्थ बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों एवम् कोटा शहर के दो बी.एड. महाविद्यालय के 40 प्रशिक्षणार्थियों कुल 80 को न्यादर्श हेतु चुना गया। प्रस्तुत अध्ययन में वैज्ञानिक अभिवृति जाँचने के लिए डॉ. श्रीमती शैलजा भागवत द्वारा निर्मित साइन्टिफिक एटीट्यूड स्केल को प्रयुक्त किया गया। शोधकर्त्री ने पाया कि दूरस्थ एवं सामान्य बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है, किन्तु लिंग के आधार पर महिला प्रशिक्षणार्थियों व पुरूष प्रशिक्षणार्थियों में न के बराबर अन्तर पाया गया।

रीना रानी और मनीषा (2013) 'सेवापूर्व अध्यापकों की साईबर संसाधानों के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन' षीर्षक पर शोधपत्र प्रस्तुत किया और निष्कर्ष में बताया कि ज्यादातर सेवापूर्व अध्यापकों की साईबर संसाधानों के प्रयोग के प्रति तटस्थ अभिवृत्ति पाई गई। साईबर संसाधानों के प्रयोग की अभिवृत्ति उनके शिक्षण–अधिगम के गत्यात्मक विकास में सहायक नहीं पाया गया। अध्यापकों को अपने कार्यों को अधिक सुगम एवं प्रभावी बनाने में साईबर संसाधनों का ज्ञान अधिक श्रेयकर होता है। शोधार्थी को विश्वास है कि साईबर संसाधनों के प्रयोग से कम्प्यूटर का शिक्षा में अधिक प्रभावषाली प्रयोग होगा। उन्होंने यह भी बताया कि लिंग एवं स्थान का सेवापूर्व अध्यापकों की साइबर संसाधनों के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पाया गया।

सिंह, डॉ. जे.डी., गिल, डॉ. तारा, सिंह (2013) ने 'कम्पयूटर शिक्षा के प्रति माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अभिवृति का अध्ययन' किया। इसमें इनका उद्देश्य सामाजिक आर्थिक स्तर पर, सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालय, जातिगत आधार पर, क्षेत्र के आधार पर व अभिभावकों के व्यवसाय के आधार पर माध्यमिक विद्यालय की छात्र–छात्राओं की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिवृति को जानना था। इस अध्ययन में हनुमानगढ़ जिले के संगरिया तहसील व हनुमानगढ़ के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय और निजी विद्यालयों से यादृच्छिक आधार पर 800 छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया गया। छात्रों की कम्पयूटर शिक्षा के प्रति अभिवृति जानने के लिए सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया। छात्रों की कम्पयूटर शिक्षा के प्रति अभिवृति जानने के लिए शोधकर्ता द्वारा स्वयं अभिवृति मापनी निर्माण कर प्रयोग की गयी। कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिवृति जानने के लिए सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि को मापने के लिए राजबीर सिंह, राधेश्याम व सतीश कुमार द्वारा निर्मित सामाजिक आर्थिक स्तर मापनी ";मैए 2006) को प्रयोग में लाया गया। प्रस्तुत शोध कार्य में दत्त विश्लेषण हेतु विवरणात्मक विश्लेषण (प्रतिशतता, सहसंबंध, मध्यमान, मानक विचलन) विभेदात्मक विश्लेषण में मध्यमान अन्तर की सार्थकता हेतु टी–परीक्षण का प्रयोग किया

गया। शोधकर्ता ने पाया कि माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की कम्पयूटर शिक्षा के प्रति अभिवृति अधिक अनुकूल पायी गई। सामाजिक–आर्थिक स्तर, सरकारी व निजी 'माध्यमिक विद्यालय के छात्र छात्राओं, जातिगत आधार पर, व अभिभावकों के व्यवसाय के आधार पर कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति माध्यमिक विद्यालयों के 'छात्र छात्राओं' की अभिवृति में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। परन्तु क्षेत्र के तल पर माध्यमिक विद्यालयों के 'छात्र–छात्राओं' की कम्पयूटर शिक्षा के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर पाया गया।

देवी, एस. (2014) 'संज्ञानात्मक शैली, व्यवहार अभिविन्यास, संवेगात्मक क्षमता और शिक्षण–अधिगम के बारे में अभिवृत्ति का बी.एड. विषय–अध्यापकों का शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में अध्ययन' षीर्षक पर मदर टरेसा विश्वविद्यालय से पी–एच.डी. स्तरीय शोधकार्य किया और निष्कर्ष में बताया कि प्रशिक्षणार्थियों के व्यवहार अभिविन्यास, संवेगात्मक क्षमता और शिक्षण–अधिगम के बारे में अभिवृत्ति में लैंगिक आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। आयु के आधार पर प्रशिक्षणार्थियों में व्यवहार अभिविन्यास और संवेगात्मक क्षमता में सार्थक अन्तर पाया गया। 28 वर्ष से अधिक आयु विषय–अध्यापकों के व्यवहार अभिविन्यास अधिक उत्तम पाया गया। शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक योग्यता के आधार पर प्रशिक्षणार्थियों के व्यवहार अभिविन्यास में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। परन्तु विषयवार विषय–अध्यापकों के व्यवहार अभिविन्यास में सार्थक अन्तर पाया गया। माता–पिता की शैक्षिक योग्यता, उनके व्यवसाय एवं स्थानियता के आधार पर विषय–अध्यापकों के व्यवहार अभिविन्यास में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

निष्कर्ष–

ज्ञान का पुनरावलोकन व अध्ययन नये ज्ञान का सदैव पथ–प्रदर्शन करता है। साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की प्राप्ति एक महत्वपूर्ण कदम है। सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के शोधार्थी का कार्य 'अंधेरे में तीर' जैसा लक्ष्यहीन होगा। सत्य वही है अर्थात् किसी समस्या पर कितना कार्य हुआ है। एक ओर हमारा पथ–प्रदर्शक करता है वही दूसरी ओर यह संदेश भी है कि अभी बहुत कुछ बाकी है जिसे शोधार्थी वर्तमान तथा भविष्य के कार्यो के श्रेष्ठ निर्देशन में कर सकता है।

यह शोधार्थी को पूरे अवसर प्रदान करता है जिससे कि शोधार्थी पूर्व में किये गये शोध कार्यों में पाये जाने वाले गैप को भरकर नवीन शोध कार्यों में आवश्यक सुधार करने में सफल होता है। यह शोधार्थी द्वारा किये जा रहे कार्यों को स्वयं ही और अधिक मजबूत आधार प्रदान करने में सहायक होता है। सम्बन्धित साहित्य का उद्देश्य सम्बन्धित परियोजना के सम्बन्ध में शोधार्थी के प्रर्दशन एवं अर्न्तदृष्टि को और अधिक तीक्ष्ण बनाने में सहायता करता है। कोई भी व्यक्ति किसी भी शोध प्रबन्ध की पूर्ण रूप में व्याख्या नहीं कर सकता है परन्तु वह पूर्व में किये गये शोध कार्यों के परिणामों का अध्ययन कर वर्तमान शोध को उपयोगी बना सकता है। अन्त में कहा जा सकता है कि सम्बन्धित साहित्य को किस प्रकार वर्तमान शोध से जोड़ कर उसको उपयोगी बनाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

- वर्मा एस.के और सहाय, आर. एन. (2004) आक्सफोर्ड इंग्लिश–हिन्दी डिक्शनरी, आक्सफोर्ड
- यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली।
- राय, पी.एन (1989) अनुसंधान परिचय, षष्ट संस्करण, लक्ष्मी नरायण अग्रवाल, आगरा–3

- माथुर, एस.एस़. शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
- मिटिजल होराल्ड ई. (1982) इन्साक्लोपीडिया ऑफ एजूकेशन रिसर्च, 1–4, फिफ्थ एडिशन, दि मैकमिलन पब्लिशिंग कम्पनी, इंक, न्यूयार्क।
- तनेजा, आर.पी. (2020) द अमेरिकन हेरिटेज, डिक्सनरी ऑफ दि इंग्लिश लैंग्वेज, फोर्थ एडिसन, हाटन मिकिन कम्पनी।
- टूबेल, राबर्ट एल. (2019) इनसाइक्लोपीडिया आफ एजूकेशन रिसर्च, फोर्थ एडिसन, दि मैकमिलन कम्पनी, कोलियर मैकमिलाण्ट लि0, लन्दन।
- हाब्स एण्ड हाब्स (2019) दि कनसाइज डिक्सनरी आफ एजूकेशन, वी.एन.आर., न्यूयार्क।
- भटनागर, सुरेश (2001) शिक्षा मनोविज्ञान तथा शिक्षण शास्त्र, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
- प्रकाश, रवि (2003) मेथड्स ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, कामनवेल्थ पब्लिकेशन, दिल्ली।
- पाठक, नवराज (2004) डिक्सनरी ऑफ डिफिकल्ट वर्डस, विश्व भारती पब्लिकेशन, दिल्ली।
- नागपाल शकुन्तला (2003) इनसाइक्लोपीडिया ऑफ एजूकेशनल मेथेडोलाजी, वाल्यूम–2, अनमोल पब्लिकेशन, दिल्ली।
- निरमन, पूजा (2000) इनसाइक्लोपीडिया आफ मार्डन एजूकेशन इन ट्वन्टी वन सेन्चुरी, अनमोल पब्लिकेशन, दिल्ली।